# भारतीय वास्तुशास्त्र

## परिचय-पाठ्यक्रम

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली - 110 058

# भारतीय वास्तुशास्त्र
## परिचय-पाठ्यक्रम


**प्रधान सम्पादक**

प्रो. वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

**मार्गदर्शक**

प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

**सम्पादक**

प्रो. वासुदेव शर्मा



**राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्**

मानितविश्वविद्यालयः

**नवदेहली - 110058**

# सम्पादकीय

॥ ॐ वास्तोष्पतये नमः ॥

भारतीय वास्तुशास्त्र का जनजीवनोपयोगी वैदिक विद्याओं में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैदिक काल में ऋषि-मुनियों के आश्रम, गुरुकुल, पर्णकुटी, यज्ञशाला, कुण्ड, मण्डप-निर्माण, राजा, मन्त्री-पुरोहितों के आवास का निर्माण तथा मनुष्य को धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के अनुकूल वातावरण प्रदान करने वाले सभी निर्माण-कार्य इस वास्तुविद्या के नियमों के आधार पर किये जातें थे। वैदिक संहिता-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद् आदि ग्रन्थों में इस विद्या के अनेक सूत्र प्राप्त होते हैं। वास्तुदेवता[1] का वैदिक मन्त्र और उसमें की गई प्रार्थना इस विद्या के वैदिककालीन स्वरूप का स्पष्ट साक्ष्य है। पौराणिक काल में वास्तुशास्त्र शिल्पशास्त्र के रूप में विकसित हुआ। मत्स्यपुराण[2] में इस शास्त्र के 18 उपदेशक प्रतिपादित किये गये-

**भृगुरत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा**
**नारदो नग्नजिच्चैव विशालाक्षः पुरन्दरः।**
**ब्रह्मा कुमारो नन्दीशः शौनको गर्ग एव च**
**वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शुक्रबृहस्पती।।**
**अष्टादशैते विख्याताः शिल्पशास्त्रोपदेशकाः।।**

इन प्रख्यात 18 उपदेशकों द्वारा निर्दिष्ट नियम व विधियों के द्वारा पौराणिक काल में अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी, द्वारिका आदि पुरियों का निर्माण, समुद्र पर सेतु का निर्माण इन्द्रप्रस्थ का निर्माण, युधिष्ठिर का सभा भवन और अनेक आश्चर्योत्पादक भवनों, महलों, मन्दिरों, मूर्तियों, जलाशयों, आश्रमों, उपवनों व नगरों का निर्माण किया गया। ये सभी निर्माण इस शास्त्र की उपयोगिता और महत्त्व को स्थापित करने में तत्तत्काल में साक्ष्य बनें। महाभारत काल के बाद से लेकर आधुनिक समय तक अनेक मठ, मन्दिर, नगर, जलाशय, गुफाओं में सजीव चित्रकला, मूर्तिकला के साक्ष्य इसके विभिन्न भेदों का प्रतिपादन करने में कारण बनें। ज्योतिष और वास्तुशास्त्र का अंगांगीभाव सम्बन्ध होने के कारण ज्योतिष के अनेक ग्रन्थों में वास्तुविद्या के नाम से इस शास्त्र का

---

1. "ॐ वास्तोष्पते ! प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽनमीवो भवानः।
यत्वे महे प्रतित्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।"

2. अध्याय 252 (मत्स्यपुराण)

# विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| | **प्राक्कथन** | | i |
| | **सम्पादकीय** | | iii-vi |
| **इकाई - 1** | **इतिहास एवं परिचय** | | **1-15** |
| | | प्रयोजन | 2 |
| | | प्रस्तावना | 2 |
| | **1.1** | वास्तुशास्त्र एवं उसका स्वरूप | 2-4 |
| | **1.2** | वास्तुशास्त्र का महत्त्व एवं उपयोगिता | 4 |
| | **1.3** | वास्तुशास्त्र का उद्‌भव एवं विकास | 4-5 |
| | **1.4** | वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक | 5-6 |
| | **1.5** | वास्तुशास्त्र के मानक ग्रन्थ एवं आचार्य | 6-14 |
| | **1.6** | वर्तमान में वास्तुशास्त्र के अध्ययन केन्द्र | 14-15 |
| **इकाई - 1** | **वास्तुशास्त्र का लक्ष्य एवं प्रतिपाद्य** | | **16-26** |
| | | प्रयोजन | 17 |
| | | प्रस्तावना | 17-18 |
| | **2.1** | वास्तुशास्त्र का लक्ष्य | 18 |
| | **2.2** | वास्तुशास्त्र का प्रतिपाद्य | 18-19 |
| | **2.3** | वास्तुशास्त्र शक्तियों का उपयोग | 19-24 |
| | **2.4** | वास्तुशास्त्र एवं पञ्चमहाभूत | 24 |
| | **2.4.1** | आकाश | 25 |
| | **2.4.2** | वायु | 25 |
| | **2.4.3** | अग्नि | 25 |
| | **2.4.4** | जल | 26 |
| | **2.4.5** | पृथ्वी | 26 |

ही ग्राह्य होता है दूसरे घर का पुराना दारु प्रयोग वर्जित है। लकड़ी का घर बनाने हेतु अग्राह्य[1] काष्ठों का वर्णन इस प्रकार है- पुराना काष्ठ, विद्युत् से दग्ध काष्ठ, स्वत: गिरा हुआ वृक्ष, मन्दिर-परिसर का वृक्ष, श्मशान भूमि का वृक्ष, क्षीरी वृक्ष, नीम तथा अरणि का वृक्ष वर्जित हैं। शेष वृक्षों का काष्ठ ग्राह्य है। वृक्षच्छेदन के लिए दैवज्ञ को मुहूर्त पूछकर पूर्व रात्रि में वन जाकर वृक्ष-पूजन करे। फिर वृक्ष को ईशान कोण से काटना प्रारम्भ कर दक्षिणावर्त से वृक्ष काटे। कटे हुए वृक्ष की पुन: परीक्षा करे कि वृक्ष काष्ठ में कोई विकार न हो जैसे वृक्ष के कोटर में छिपकली, गोधा, मेढक, सर्प एवं पाषाण आदि न हों। इन सब के होने पर काष्ठ ग्राह्य नहीं होता। लकड़ी का घर निर्माण हेतु मास ग्रहण अनिवार्य नहीं है किसी भी माह में निर्माण सम्भव है परन्तु पञ्चाङ्ग-शुद्धि देखना अनिवार्य है।

## 3. कच्चे घर

यह घर पर्णकुटी व काष्ठ गृह से अधिक प्रशस्त है। मिट्टी के घर में लकड़ी का आंशिक प्रयोग होता ही है। इसकी मोटी-मोटी दीवारें, लकड़ी और मिट्टी की परत से मोटी छत ठंड एवं गर्मी को रोकने में अधिक उपयोगी है। मिट्टी के घर भी कलात्मक, सुन्दर एवं मनोहर होते हैं। इनकी दीवारों पर लेपकर स्थानीय कला, चित्रकला एवं काष्ठ के द्वारों की कला, स्तम्भ आदि देखने योग्य होते हैं। कच्चे घर में सूर्य का प्रकाश तथा वायुसञ्चार, गवाक्ष, खिड़कियों तथा द्वारों के माध्यम से प्राप्त करते हैं। वर्षा ऋतु में कच्चे घर की समुचित देखभाल करना आवश्यक है।

कच्चे घर में देवगृह, सामूहिकगृह, शयनकक्ष, प्रसूतिगृह, पशुगृह, भण्डारण कक्ष और वराण्डे का निर्माण वास्तुशास्त्रीय विधान से किया जाता है। कच्चे घर के निर्माण से पूर्व दैवज्ञ से भूमि चयन के उपरान्त मुहूर्त के अनुसार कार्य करना चाहिए। विद्वान् पण्डित से खनन के बाद विधिपूर्वक वास्तु-पूजा व होमादि कराना चाहिए।

## 4. पक्के घर

प्राय: लोग ग्राम, नगर, महानगर में पक्के मकान ही बनवाते हैं! आवासीय गृह इष्टिकाओं (ईंट) के प्रयोग से निर्मित होता है। इष्टिका कोण सहित, देखने में सुन्दर तथा मजबूत होनी चाहिए। पक्के घर का शिलान्यास इष्टिकाओं के पूजन से होता है। राहु मुख के कोण परिवर्तन से मुहूर्त्त किया जाता है। इष्टिकाओं के नाम नन्दा, भद्रा, जया, पूर्णा तथा रिक्ता हैं। इनका वैदिक मन्त्रों व पौराणिक श्लोकों द्वारा पूजन कर न्यास किया जाता है। "कश्यप" अग्निकोण में ही शिलान्यास के पक्षधर है परन्तु वास्तु-शान्ति ग्रन्थों के अनुसार चतुष्कोणों में भी शिलान्यास का विधान है। नये घर के लिए नयी सामग्री का ही प्रयोग विहित है।

---

1. (क) खगनिलयभग्नसंशुष्कदग्धदेवालयश्मशानस्थान्।
क्षीरतरुधव विभीतकनिम्बारणिवर्जितान् छिन्द्यात्।।
बृहत्संहिता, वास्तुविद्याध्याय, श्लोक 120

(ख) रात्रौ कृतबलिपूजनम् प्रदक्षिणं छेदयेद्दिवा वृक्षम्।
धन्यमुदक् प्राक् पतनं न ग्राह्योऽतोन्यथा पतित:।।
बृहत्संहिता, वास्तुविद्याध्याय, श्लोक 121

(ग) बृहत्संहिता, वास्तुविद्याध्याय, श्लोक 122-123

# राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली - 110 058